हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

चीड़ के वनों में आग लगने की घटनाओं को कम करने हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 28 फरवरी 2019 को ग्राम पंचायत कसौली-गढ़खल, तहसील कसौली, जिला सोलन (हिमाचल प्रदेश) में **चीड़ के वनों में आग लगने की घटनाओं को कम करने हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन** किया गया, जिसमें कसौली-गढ़खल पंचायत के 28 ग्रामीणों तथा पंचायत प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. रणजीत कुमार, वैज्ञानिक, हि0व0अ0 सं0, शिमला ने कसौली गढ़खल के प्रधान, पंचायत प्रतिनिधियों, पंचायत सचिव तथा ग्रामवासियों का स्वागत तथा अभिनंदन किया। उन्होने बताया की इस कार्यक्रम का आयोजन संस्थान द्वारा संचालित की जा रही अनुसंधान परियोजना **"चीड़ के वनों में पौधों की विविधता और मिट्टी के गुणों पर नियंत्रित जलान के प्रभाव का विश्लेषण"** (Analyzing Impact of Control Burning on Plant Diversity and Soil Properties in Chir-Pine Forests) के अंतर्गत किया जा रहा है।

डॉ. रणजीत कुमार ने बताया कि वनों की आग, विशेषकर चीड़ के वनों में लगने वाली आग, बार-बार होने वाली एक वार्षिक घटना है तथा सूखे पत्तों व घास के जलने से वृक्षों,

जैवविविधतता तथा पारिस्थितिकी को भारी क्षति पहुँचती है। वनों में आग लगने के कारण गांवो को हमेशा खतरा बना रहता है तथा आग अनियंत्रित हो कर मानव जीवन एवं सम्पदा को क्षति पहुंचा सकती है । उन्होने कहा कि वनों में आग की घटनाएँ प्राकृतिक कारणों से बहुत कम होती है तथा अधिकतर आग मानवीय कारणों से ही लगती है। नई घास उग सके, इसलिए लोग पत्तों को आग लगा देते है। कई बार आग अनजाने में या मानवीय लापरवाही से भी लगती है जैसे सड़कों या वनों में जलती हुई माचिस की तीली एवं सिगरेट/ बीड़ी या जलती हुई लकड़ी फैंकने से तथा खेतों एवं घरों के आस-पास घास, भूसे या कूड़ा करकट पर लगाई आग का निकट के जंगलों में फैलना भी आग लगने के मुख्य कारण हो सकते हैं।

वनों में लगने वाली आग को रोकने के उपायों पर चर्चा करते हुए डॉ. रणजीत ने बताया कि वन अग्नि की जल्द जानकारी मिलने से क्षति को कम किया जा सकता है। शीघ्र जानकारी के

लिए आग पर नजर रखने वालों (फायर वाचर) की तैनाती जरूरी है। आधुनिक तकनीकों की उपलब्धतता से भी वनों की आग के बारे में शीघ्र जानकारी प्राप्त की जा सकती है। उपग्रहों द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर क्षेत्रीय इकाईयों को अग्नि चेतावनी मोबाइल फ़ोन द्वारा उपलब्ध करवाई जा सकती है। उन्होंने आगे बताया कि अग्नि शमन दस्तों को उचित स्थानों पर

तैनात करना जिससे वे आग के स्थानों पर शीघ्र पहुँच सके, अग्नि शमन शिविरों में उचित जनशक्ति उपलब्ध करवाना जिसमें वन कर्मी, स्वयंसेवक समुदाय एवं मजदूर आदि शामिल हों, कुछ आवश्यक उपाय हैं।

कार्यक्रम के अंत में ग्राम पंचायत कसौली-गढ़खल की प्रधान, श्रीमती मधु शर्मा ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा इस महत्वपूर्ण विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने तथा स्थानीय लोगों का वनों में लगने वाली आग के बारे में ज्ञानवर्धन करने के लिए धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त की कि संस्थान द्वारा इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन भविष्य में भी किया जाता रहेगा।

मी डया कवरेज

वनों में आग की घटनाओं को कम करने के लिए चलाए जाएंगे जागरूकता कार्यक्रम

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने की कसौली से कार्यक्रम की शुरूआत

शिमला, 28 फरवरी (ब्यूरो): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पूरे प्रदेश में लोगों को गर्मियों के मौसम में चीड़ के जंगलों में लगने वाली आग की रोकथाम को लेकर जागरूकता कार्यक्रम चलाएगा। इसी कड़ी में संस्थान के कर्मचारियों ने कसौली के गढ़खल में चीड़ के वनों में आग लगने की घटनाओं को कम करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें गढ़खल पंचायत के लगभग 30 ग्रामवासियों तथा पंचायत प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस मौके पर डा. रणजीत कुमार ने बताया कि वनों में आग विशेषकर सूखे पत्तों के कारण लगती है। घास के जलने से वृक्षों व जीव-जंतुओं को भारी क्षति पहुंचती है। वनों में आग लगने के कारण मानव बस्तियों को हमेशा

शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित शिविर के दौरान संयुक्त चित्र में प्रतिभागी। (वि.स.)

खतरा बना रहता है तथा वनों की आग अनियंत्रित होकर मानव जीवन एवं संपदा को क्षति पहुंचा सकती है। डा. रणजीत ने बताया कि वनों में आग की घटनाएं प्राकृतिक कारणों की बजाय मानवीय कारणों से ही होती हैं। अक्सर देखा जाता है कि चीड़ के पेड़ की पत्तियां गिरने से नई घास तब तक नहीं उगती, जब तक इन पत्तियों को हटा नहीं दिया जाता। नई घास उग सके, इसलिए लोग पत्तों को आग लगा देते हैं तथा कभी-कभी इस मौसम में चीड़ की पत्तियां अपने आप आग पकड़ लेती हैं। कई बार आग अनजाने में या मानवीय लापरवाही से भी लगती है।

ऐसे मामलों पर रखें नजर

उन्होंने ग्रामीणों से आग्रह किया कि वे ऐसे मामलों पर नजर रखें। इसके अलावा एक वाचर की भी तैनाती की जा सकती है। आधुनिक तकनीकों की उपलब्धता से भी वनों की आग बारे शीघ्र जानकारी प्राप्त की जा सकती है। उपग्रहों द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर क्षेत्रीय इकाइयों को अग्नि चेतावनी मोबाइल फोन द्वारा उपलब्ध करवाई जा सकती है। उन्होंने आगे बताया कि अग्निशमन दस्तों को उचित स्थानों पर तैनात करनी चाहिए, जिससे वे आग के स्थानों पर शीघ्र पहुंच सकें। अग्निशमन शिविरों में उचित जनशक्ति उपलब्ध करवाना जिसमें वन कर्मी, स्वयंसेवक समुदाय एवं मजदूर आदि शामिल हों। इसके अतिरिक्त उचित मात्रा में पानी एवं आग से लड़ने वाले औजार भी उपलब्ध होने चाहिए।

पंजाब केसरी ई-पेपर Fri, 01 March 2019
https://epaper.punjabkesari.in/c/37194549

जानकारी कसौली–गढ़खल पंचायत में आयोजित हुआ कार्यक्रम

जंगल को आग से बचाने पर किया जागरूक

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के तत्वावधान में वीरवार को सोलन जिला की ग्राम पंचायत कसौली-गढ़खल में चीड़ के वनों में आग लगने की घटनाओं को कम करने पर एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इसमें कसौली-गढ़खल पंचायत के ग्रामवासियों और पंचायत प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस मौके पर डॉ. रणजीत कुमार ने बताया कि चीड़ के वनों में लगने वाली आग एक वार्षिक घटना है। वन अग्नि के कारण सूखे पत्तों व घास के जलने से वृक्षों, जैव विविधता और पारिस्थितिकी को भारी क्षति पहुंचती है। यही नहीं वनों में आग लगने के कारण मानव बस्तियों को भी खतरा बना रहता है, जो अनियंत्रित होकर मानव जीवन एवं संपदा को भी क्षति पहुंचाती है। उनका कहना था कि वनों में आग की घटनाएं प्राकृतिक कारणों से बहुत कम होती है। अधिकतर आग मानवीय कारणों से ही लगती है। कई स्थानों पर लोग स्वयं जंगलों में नई घास के लिए चीड़ की पत्तियों को आग लगा देते हैं। इसके अलावा कभी-कभी गर्मियों के मौसम में चीड़ की पत्तियां अपने-आप आग पकड़ लेती हैं। कई बार आग अनजाने में या मानवीय लापरवाही से भी लगती है। उन्होंने उदाहरण दिए कि सड़कों या वनों में जलती हुई माचिस की तिल्ली, जलती हुई सिगरेट/बीड़ी या जलती हुई लकड़ी फेंकने से भी आग लग जाती है। इसी तरह खेतों एवं घरों के आस-पास घास, भूसे या कूड़ा-करकट पर लगाई आग भी निकट के जंगलों में फैल जाती है। वनों में लगने वाली आग को रोकने के उपायों पर चर्चा करते हुए डॉ. रणजीत ने बताया कि वन अग्नि की जल्द जानकारी मिलने से क्षति को कम किया जा सकता है। इसके लिए फौरन वन अधिकारियों को सूचित किया जाना चाहिए। इसके अलावा अग्निशमन दस्तों को उचित स्थानों पर तैनात करना, अग्निशमन शिविरों में उचित जनशक्ति उपलब्ध करवाना, स्वयंसेवक समुदाय गठित करना और आग बुझाने वालों के पास पर्याप्त पानी व उपकरण भी होने चाहिए। इस दौरान कसौली-गढ़खल की प्रधान मधु शर्मा ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला का इस कार्यक्रम के लिए आभार जताया।

- कहा, आग से वृक्षों जैव विविधता को पहुंचती है भारी क्षति
- प्राकृतिक कारणों से बहुत कम होती हैं आग लगने की घटनाएं